Airo International Research Journal
Volume XII, ISSN: 2320-3714
October, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी : मूल्य संक्रमण एवं नई मूल्य दृष्टि

डॉ. ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

"आज मूल्य-संक्रमण के युग में अनेक दायरे सिमटे हैं, बिखरे हैं, फैले हैं - मानव-सम्बन्धों की लहरे अथाह सिन्धु में अस्तित्व की तलाश में भटक रही है। विघटन-शील जीवन-मूल्यों का शिकार एवं बुद्धि संवेदना का दावेदार मनु-पुत्र नई वैचारिक पगडण्डियों के अनुसंधान में जूझ रहा है। पुरात्तन आस्था, विश्वास एवं मूल्य | टूट रहे हैं। विज्ञान, तकनीक और प्रौद्योगिकी के तीर्व विकास के कारण नये मूल्यों का सृजन हो रहा है। जीवन के विविध क्षेत्रों में पुरात्तन एवं नयी मूल्य दृष्टि के बीच टकराव बढ़ रहा है। यही कारण है कि आज पीढ़ियों के बीच (जनरेशन गैप) अंतराल दिखायी देता है। ऐसे में कुछ पुरातन मूल्य विनिष्ट हुए हैं, कुछ पुरातन मूल्यों का पुनर्संस्कार हुआ है तथा कुछ नए मूल्य स्थापित हुए है। यहां तक की स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों ने पश्चिमी जीवन शैली से आयातित कुछ जीवन-मूल्यों को भी अपनी कहानियों में वर्णित किया है। यदि देखा जाए तो आधुनिक या स्वातंत्र्योत्तर कहानीकार में कहीं भी जीवन-मूल्यों की रक्षा या चिंता का भाव दिखायी नही देता है। जीवन में 'स्थापित शाश्वत् मूल्य निरंतर टूट रहे है, उनकी जगह व्यावहारिक मानवीय मूल्यों की स्थापना के 'संकेत' स्वातंत्र्योत्तर कहानी में हो रहे है। 'संकेतिक' मूल्य-दृष्टि , कीस्थापना का यह प्रयास सायास नही है अपितु समय की मांग है। स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में यह परिवर्तित मूल्य-दृष्टि स्पष्टतः दिखायी देती है।

स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में सम्बन्धों एवं स्थितियों का चित्रण निर्मम रूप से हुआ है। संयुक्त परिवारों के विघटन के कारण मानवीय रिश्ते उसी रूप में मान्य नहीं रहे जैसे पहले थे। अर्थ का स्वार्थ हावी होने के कारण सब सम्बन्ध दरकने लगे। मां-बाप, भाई-बहन, पति-पत्नी के बीच अनाम दूरियां आ गयी। स्वातंत्र्योत्तर कहानी मानवीय सम्बन्धों में आये बदलाव को बड़ी सूक्ष्मता से जांचती-परखती है।

आजादी के बाद भारत का आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश बड़ी तीव्रता से बदला। अकाल, महंगाई और भूखमरी के कारण लोगों का जीवन दूभर हो गया। बढ़ती बेरोजगारी विशेषतः शिक्षित बेरोजगारी के कारण युवा-स्वप्नों का भंजन हुआ। परिणामस्वरूप जनमानस मे अविश्वास का भाव भर गया। काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानियों में अकाल, बाढ़ और सूखे के कारण उपजे आक्रोश एवं असंतोष को उजागर किया है। आम आदमी पेट की भूख को शांत करने के लिए निरंतर संघर्ष कर रहा है, वहीं मिल मालिक अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे मजदूर का अंत करने पर तुले हैं।

Airo International Research Journal
Volume XII, ISSN: 2320-3714
October, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

सार रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी कहानी अपने प्रारंभिक दौर से ही युगीन विसंगतियों तथा विद्रूपताओं पर करारा प्रहार करती है। प्रेमचन्द के आगमन के साथ यह कहानी विकासमान अवस्था को प्राप्त करती हुई भारतीय ग्रामीण एवं नगरीय जीवन को एक साथ रेखांकित करती है। स्वातंत्र्योत्तर कहानी जीवन और समाज से गहरा सम्बन्ध रखती है। स्वातंत्र्योत्तर कहानी का मूल लक्ष्य तात्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में मानव जीवन की विसंगितियों को उजागर करना है। यहाँ भाषा का तेवर भी बदला है। शैल्पिक संवेदना के स्तर पर अनेकानेक प्रयोगों ने कहानी को गद्य की विशिष्ट विधा के रूप में पहचान दिलाई है, जो उसकी महती विषेशता है। यह ऐसा दौर है जब हिन्दी कहानी की विकास यात्रा मे अनेक मोंड आए। यद्यपि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी विभिन्न आंदोलनों की उपज है। हिन्दी कहानी का छठा दशक कहानी के स्वरूप परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण बन पडा है। हिन्दी कहानी अनेक आंदोलनों से गुजरती हुई अपने आस पास की जमीन को सुंघकर आगे बढी है। अतः इसका अपना जीवंत अनुभव केन्द्र है इसलिए यह कहानी निरंतर जीवंत बनी रही है।

संदर्भ सूची ----------

1. रामस्वरूप गुप्त - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी, चिंता प्रकाशन, पिलानी राजस्थान पृ0 35
2. अमृत राय, आधुनिक भावबोध की संज्ञा पृ0 18-19
3. नरेन्द्र मोहन, समकालीन कहानी की पहचान-पृ0 63
4. श्रीपत राय, 'कहानी' नववर्षांक, 1974 (जनवरी) संपादकीय
5. से0रा0 यात्री, 'अधेरें का सैलाब', सारिका (अक्तूबर) 1974
6. से0रा0 यात्री, 'धरातल', दर्पण
7. ममता कालिया, 'बसंत सिर्फ एक तारीख', सारिका, (जून) 1978
8. सिम्मी हर्षिता, 'चक्रव्यूह', संचेतना (28 दिसम्बर 1973)
9. डॉ० पुष्पपाल सिंह-समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ, पृ० 119
10. 'जलते हुए डैने' सारिका/जनवरी 1975
11. मधुकर सिंह 'बाढ़ कहानी नववर्षांक (जनवरी, 1972)
12. राजेन्द्र यादव, एक दुनिया : समानान्तर, पृ0 24